शिष्य सिद्ध करती है।

अम्बेडकर ने जब अपना सिद्धांत विकसित किया तो बुद्ध सहित तमाम लोगों के लिखे कहे को विवेचित कर, आलोचित कर नया रास्ता तलाशा। मार्क्स ने उस हीगल के दर्शन को उल्टा कर दिया जो उसके लिए गुरु जैसा रहा और अपने समय और इतिहास के हर महत्त्वपूर्ण दार्शनिक, साहित्यकार, लेखक, वैज्ञानिक की विवेचना और आलोचना की। गांधी, गीता, बाइबल और जाने क्या क्या पढ़ते हैं, आलोचित–विवेचित करते हैं। इनमें से किसी ने किसी एक की अंधभक्ति नहीं की और मुर्गे नहीं लड़ाए। इन सबने अपने अंधभक्तों की भर्त्सना की। मार्क्स ने पूछा– क्या मैं मार्क्सवादी हूं? अम्बेडकर ने अंतिम समय में कहा – मैं अपने समर्थकों से निराश हूं। गांधी ने कहा– अब कोई मेरी नहीं सुनता।

इस बार की अम्बेडकर जयंती इसी बातचीत को केंद्र में रख कर होनी थी...नहीं हुई।

अप्रैल का महीना विदा देने का भी महीना बन गया।

मशहूर कार्टून कैरेक्टर्स टॉम एंड जैरी, पोपाय द सेलर मैन जैसे शानदार कार्टून फिल्म्स के निर्देशक और निर्माता जीन डाइच का 95 साल की उम्र में निधन हो गया। जीन डाइच 16 अप्रैल को अपने अपार्टमेंट में मृत पाए गए और इस खबर की पुष्टि उनके करीबी पीटर हिमल ने 18 अप्रैल को की। दुनियाभर को अपने कार्टून कैरेक्टर्स का दीवाना बना चुके जीन पहले उत्तरी अमेरिका में सेना से जुड़े हुए थे। वो वहां पायलटों को ट्रेनिंग देने और सेना के लिए ड्राफ्टमैन का काम करते थे। लेकिन सेहत संबंधी समस्याओं के चलते साल 1944 में उन्हें सेना से हटा दिया गया।

इसके बाद ही उन्होंने एनिमेशन में अपना हाथ आजमाया और दुनिया को टॉम एंड जैरी जैसी हिट फिल्म दी। एनिमेशन में जीन ने काफी काम किया लेकिन उन्हें प्रसिद्धि टॉम एंड जैरी और पोपाय द सेलर मैन से मिली। अपने बेहतरीन निर्देशन के लिए उन्हें चार बार ऑस्कर नॉमिनेशन भी मिले। इतना ही नहीं साल 1967 में फिल्म मुनरो के लिए ऑस्कर पुरस्कार दिया भी गया। जीन ने टॉम एंड जैरी के कुल 13 एपिसोड्स बनाए थे।

टॉम एंड जैरी एक ऐसा कार्टून है जो लगभग सभी उम्र के लोगों को पसंद आता है। इस कार्टून की कहानी मुख्यतः चूहे और बिल्ली की लड़ाई से प्रेरित है। इसमें टॉम एक बिल्ली है और जैरी एक चूहा है। दोनों एक दूसरे के जानी दुश्मन हैं लेकिन इसी के साथ–साथ दोनों एक दूसरे से प्यार भी करते हैं। दोनों एक दूसरे को बर्दाश्त भी नहीं कर सकते और एक दूसरे से लड़े बिना रह भी नहीं सकते। इस कार्टून कैरेक्टर की यही खूबसूरती और नोक–झोंक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसमें नाराजगी और प्यार का एक खूबसूरत रिश्ता दिखाने की कोशिश की गई है। ये कार्टून बिना डायलॉग्स के सिर्फ संगीत और दृश्यों के माध्यम से संवाद करता है।

टॉम एंड जैरी मेरे पसंदीदा कार्टून कैरेक्टर हैं। इस लॉकडाउन में मैंने कई बार उनसे मुलाकात की है। आज टॉम एंड जैरी के साथ हम जीन को विदा देते हैं। जब तक टॉम और जैरी हमारे बीच हैं जीन भी हमारे साथ हैं। हम सबके होंठों पर मुस्कुराहट लाने के लिए शुक्रिया जीन...

पूरे महीने घर में कैद रहने के बावजूद सुबह–सुबह मन खुश ही रहता है...रात में देर से सोने के बाद भी आँख जरा जल्दी खुल जाती है। इस महीने मौसम का मिजाज भी कुछ बेतकल्लुफ सा था...आहिस्ता–आहिस्ता घर के सारे काम निपटते... रात बर्तन कुछ ज्यादा ही जूठे हो गए थे यह बात बर्तन धोते हुए पता चलती है। जब भी थोड़ा ज्यादा समय मिला, तवे को देर तक घिसा...बेगम के बिस्तर छोड़ने से पहले झाड़ू भी लगा ही लिया। जब हम 24 घंटे अपने प्रेम के साथ रह रहे हों तो वह समय बहुत सारी कसौटियों पर खुद को कसे जाने का भी होता है। जिस लोकतान्त्रिक और विवेक सम्मत समाज की स्थापना की बात हम शिक्षक साथियों से करते हैं वह लोकतंत्र और विवेक हमारे पारिवारिक जीवन में कहाँ स्थित है? कहीं वह हमारे जूते की नोंक पर तो नहीं? या फिर वह बेताल की तरह हमारे कंधे पर सवार है और हमने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो हमारा सर फट जायेगा या वह सचमुच हमारे सामान्य जीवन का स्वाभाविक–नैसर्गिक साथी बन गया है? कितनी दफे हमने अपने आंतरिक लोकतंत्र को चोट पहुंचायी? इस लॉकडाउन ने मुझे बेहिसाब मौके दिए हैं कि मैं खुद की आतंरिक लोकतान्त्रिक अन्विति को पुनः पुनः कस लूं, उनमें आ रही सलवटों को मिटा सकूं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन रूद्रपुर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

कुछ भी स्थायी नहीं इस अस्थायी दुनिया में

– खजान सिंह

महामारी के इस काल में जीना और जीने के लिए जरूरी सूचना और उपयोगी ज्ञान को तेज घटाटोप में से छानना बहुत बड़ी चुनौती लगी। तमाम रायचंद उपस्थित हो गए। उपयोगी सूचनाएं और कचरा एक साथ गड्डमगड्ड हो गया। मगर ज़ेहन में एक ही सवाल था कि शिक्षक और शिक्षार्थी से कैसे संवाद हों।

पिछले साल नवम्बर–2019 के अंतिम दिनों में हम भाषा शिक्षण की हैंडबुक निर्माण के लिए होटल जयपुर ग्रीन में जमा हुए थे। उसी दौरान चीनी सैलानियों का एक विशाल दल उसी होटल में आ पहुंचा। हमारे भोजन में चीनी व्यंजन बढ़ गए थे। हमारे मन में जिज्ञासा हुई कि इन्हें पूछ लिया जाए कि ये कौन हैं, कहां से आये हैं। हमने अपनी टूटी–फूटी अंग्रेजी का इस्तेमाल किया। तीन लोगों से पूछने के बाद भी संकेत तक नहीं मिले एक चौथा व्यक्ति थोड़ा खुशमिजाज सा लगा हमने तपाक से हाथ मिलाया और उनसे पूछा 'भेयर आर यू कम फ्रॉम?' उसने एक शब्द में उत्तर दिया वुहान। इस जगह का नाम हमने सुना नहीं था। हमने बुहान को भूटान समझ लिया और मान लिया कि भूटानी होंगे। वैसे उनकी कद काठी, गोल चेहरे, फूली आखें, भोजन, भाषा इत्यादि के कुल योग से भी यही लगा मगर हमें एक भी आदमी बक्कु पहने नजर नहीं आया न ही कोई महिला भूटानी ड्रेस में दिखी तो पूछताछ जारी रखी तब होटल के लोगों ने बताया ये चीनी है बुहान से आये हैं। वह चीन का बहुत बड़ा औद्योगिक शहर है।

बात आई गयी हो गयी मगर जनवरी–2020 तक वुहान से बुरी–बुरी खबरें आना शुरू हो गयी थी। बुहान सुनते ही बार–बार ध्यान उन खबरों की ओर चला जाता था। संभवतः फरवरी में यह कोविड–19 महामारी घोषित हो गयी थी। फरवरी के पहले सप्ताह में अपने ज्येष्ठ भतीजे का विवाह संपन्न कर मैं कैम्पस रिक्रूटमेंट के सिलसिले में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय गया हुआ था। काम पूरा कर वापसी की यात्रा में हमने देखा कि बहुत से लोग अपने मोबाईल में इस विषाणु से सम्बंधित खबरें व इंटरनेट सर्च करते पाए जा रहे थे। मेरा एक फिरंगी

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

सहयात्री हर 5–7 मिनट में कोरोना वायरस से सम्बंधित जानकारी सर्च करता रहा था। मुझे समझ में आने लगा कि मामला काफी गंभीर और असामान्य है इस यात्रा में मेरे मन में भी भय और आशंका उत्पन्न होने लगी थी।

दरअसल, हमने महामारियों के बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था। इस दौरान ऐसा महसूस हुआ कि ज्यादा जानकारी भी परेशानी का सबब बन जाती है। महामारी की घोषणा सुनते ही वह पढ़ा हुआ ज्ञान जागृत हो गया। इसके बारे में सोचकर ही दिल बैठ जाता था। इसकी एक वजह शायद यह भी थी कि हमने अपने पिताजी से सुना था कि हमारे परदादा तीन भाई एक साथ हैजा नामक महामारी के शिकार हो गए थे और तीन लाशें एक साथ घर से निकली थीं। कई परिवार निरवंशी हो गए थे। हमारे एक परदादा बच गए थे उनको लोग यमराज का जूठा कहते थे। इसे वे मासूम लोग देवी–देवताओं का प्रकोप मानते थे उन्हें भरोसा था कि उनके आराध्य इस महामारी से बचायेंगे। इस त्रासद जानकारी की वजह से हमने ग्रेजुएशन की पढ़ाई के दौरान, प्लेग, हैजा, चेचक, सम्बंधित साहित्य, लखनऊ के अनेक पुस्तकालयों से

खोज कर पढ़ा था। उसमें जिस तरह के मंजर समझ में आये उससे कई दिनों तक मन निराशाओं के भंवर में गोते लगाता रहता था। मेरे पिताजी के अलावा भी गाँव के बड़े बुजुर्गों से अकाल और महामारी की अनेक कथाएं सुनी थीं। इस वजह से हमने अकाल के बारे में भी काफी पढ़ा।

पत्रकारिता और जनसंचार की पढ़ाई के दौरान हमारे गेस्ट फैकल्टी के रूप में अखिलेश मिश्र जी हुआ करते थे, हमें कक्षाओं के अलावा भी कुछ समय उनके सानिध्य में रहने का अवसर मिला। वे बहुत ही प्रचंड विद्वान, जाने माने पत्रकार और बहुत ही अच्छे किस्सागो भी थे। बंगाल के अकाल के दौरान की अनेक मार्मिक और डरावनी कथाएं सुनाया करते थे। उनका कुल सार यही होता था कि किस तरह युद्ध, अकाल और महामारी का आपसी सम्बन्ध है इस दौरान मानवीय गरिमा पतित हो जाती है। किस तरह व्यक्ति का व्यक्तित्व विघटित हो जाता है, किस तरह नीति नैतिकता, सामाजिक नॉर्म निचले स्तर तक आ जाते हैं। किस कदर जीवन की लय बिगड़ जाती है। साथ ही यह भी निष्कर्ष स्थापित होता कि अंततः जीवन चलता रहता है। वे बताते थे कि जहां एक ओर अकाल मृत्यु के शिकार लोगों की चिता जलती थी उसी चिता पर जीवित बचे लोगों के लिए भात पकाया जाता था। इंसान की कुल सोच पेट के बहुत करीब आ जाती है। इस कोरोना काल में वही अनुभूतियां दूसरे रूप में बहुत ही दर्दीले रूप में महसूस की।

मार्च के अंत तक देश में महामारी के चलते पूर्ण लॉकडाउन हो गया तो उस दौरान कहीं बाहर तो जा नहीं सकते थे तो अपने अन्दर ही चले गए। जगत की मोहमाया भंग सी हो गयी एक तरह का बैराग्य भाव तारी हो गया। मिजाज अति विनम्र हो गए। ख्वाबों ख्यालों में बुरे–बुरे दृश्य आने लगे। मन पूरी तरह विषाद योग की चपेट में आ गया।

लॉकडाउन की अवधि बढ़ने पर देश के कई जगहों से लाखों मजलूम, मेहनतकश लोग कोरोना से अधिक भूख और बेरोजगारी के के भय के चलते सैकड़ों हजारों किलोमीटर की पैदल यात्रा पर निकल पड़े। उनके साथ हुए अमानवीय सुलूक और उनके दुश्वारियों की दास्तानें हम सब ने देखी। मैंने यह यंत्रणा बहुत गहराई से महसूस की। 2013 को केदारनाथ और उत्तरकाशी में अतिवृष्टि से आई आपदा के दौरान मैं देहरादून और उत्तरकाशी के बीच आधे रास्ते में फंस गया था। मेरा परिवार उत्तरकाशी में ही था इस आपदा में मेरा उनके पास होना जरूरी था तब हम और मेरे एक शिक्षक साथी शूरवीर सिंह खरोला जी 54 किलोमीटर पैदल चलकर भवान से उत्तरकाशी पहुंचे थे घर आने तक पैर उठ नहीं रहे थे घिसट रहे थे। जिन लोगों ने छोटे–छोटे बच्चों के साथ सैकड़ों हजारों मील की यात्रा तय की कई लोग अपने घर पहुंचे ही नहीं हम इस पीड़ा को समझ सकते हैं। वह दृश्य देखकर नींद उड़ गयी, कलेजा मुंह को आता है।

महामारी के इस काल में जीना और जीने के लिए जरूरी सूचना और उपयोगी ज्ञान को तेज घटाटोप में से छानना बहुत बड़ी चुनौती लगी। उपयोगी सूचनाएं और कचरा एक साथ गड़मगड़ हो गया। गोबर से लेकर संजीवनी तक के द्रव्य सुझाये गए। दिनचर्या के अनेक उपागम सुझाये गए। मगर ज़ेहन में एक ही सवाल था कि चूंकि हमारा काम है शिक्षा–शिक्षण–शिक्षक और शिक्षार्थी से कैसे संवाद हों। कैसे एक दूजे को विश्वास दें। इस जरूरत ने वर्चुअल दुनिया में पदार्पण कराया और व्यक्तिगत फोन कॉल वेबिनार, वाट्सएप के जरिये रास्ता निकल आया और संवाद स्थापित हो गया हमने खूब मन की बात की और एक दूजे ने शैक्षिक संवाद को कुछ समृद्ध करने वाले मायने दिए। यह भी भान हुआ कि व्यापक सामाजिक परिदृश्य में कैसे–कैसे अशुभ अपने पूरे भद्देपन के साथ उभर कर पाए इस महामारी को लोगों ने कैसे–कैसे अवसर भुना डाले। यह भी महसूस हुआ कि अच्छाई भी कितने उजले रूप में निखरकर सामने आई।

पिछले वर्ष इसी माह दिसंबर में दूर बुहान में कहीं यह विषाणु पहचान में आया था तब लगता था कि हम तक कभी नहीं आएगा। मगर देखते ही देखते हमारे कई प्रियजनों को लील गया और कई लोगों की अंतिम यात्रा तक में शरीक न हो पाने की वेदना लगातार बनी रही। हर रोज कई बार हाथ धोत–धोते हाथों की रेखाएं साफ होती गयी। मेरे गाँव के मासूम लोगों ने जानना चाहा कि यह कैसे फैलता है हाथ धोने से क्या वास्ता है? तब एक देशी ख्याल समझ में आया हमारे कालसी के जंगलों में एक बेल होती है जिसे दागू कहते हैं ,उसकी फली में कुछ ऐसी दूल होती है कि जिसके हाथ में लग जाए उसको खुजली होती है और जितने भी लोगों से हाथ मिलाया जाएगा उन सबको खुजली हो जायेगी और यह अदृश्य होती है। यह श्रृंखला तभी टूटती है जब कोई अच्छे से हाथ धो लें। यह उदाहरण कुछ हद तक समझ आया।

इस माह दिसंबर में यह जुम्बिश देखी गयी कि हम अब नए सामान्य की ओर बढ़ें। इसी इच्छा के साथ अपनी यात्रा प्लान की 6 दिसंबर को उत्तरकाशी से उधमसिंह नगर के लिए चल दिए। जब भी पहाड़ पर यात्रा करता हूं तो यही भाव आता है कि यह अंतिम यात्रा भी हो सकती है। जब भी बेटी पूछती है कि वापस कब आओगे? तो एक अनिश्चित सा उत्तर होता है कि देखेंगे, जल्दी ही आयेंगे। हमने गौर किया कि पहाड़ी मानुष कभी परफेक्ट डेफिनेट वाक्य अक्सर क्यों नहीं बोलता। शायद इसीलिए कि इस तरह की अनिश्चितता जीवन में ज्यादा ही है।

यह बात हिमालय के जनजीवन पर शोध करने वाले एक साथी ने बताई थी कि उनको एक बार जंगली जोंकों ने चूस लिया और उनके पैरों में इंफैक्शन हो गया तो उन्होंने अपने सहयोगी को दवा लाने के लिए तैयार किया। यह कहकर कि आज शाम तक यह दवा आ जाए। तो उन्होंने बताया कि उन्होंने कहा देखते हैं कोशिश करते हैं। फिर उन्होंने पूछा कि आप सुनिश्चित क्यों नहीं कर रहे हैं यह जान पर बन आई है आप कहते हैं कि देखेंगे, जवाब था कि यहां से पैदल जायेंगे। फिर रोड तक पहुंचेंगे बस मिलेगी कि नहीं, पता नहीं। अगर मिल गयी तो वह रोकेगा कि नहीं पता नहीं। अगर रोक दे तो बस गंतव्य तक पहुंचेगी पता नहीं बरसात है तो सड़क पर मलवा आ सकता है। अगर बस पहुंच गयी तो देखना होगा कि दुकान खुली हैं और दुकान पर मिल जाए पता नहीं। अगर यह सब ठीक रहा तो देखना होगा कि यह दवा दुकान पर मिल जाय यह देखना होगा। अगर मिल गयी तो फिर वापसी में भी... खैर, यह सब वजह है जो पहाड़ में जीवन को अनिश्चितता बनती हैं।

बहरहाल, इन्हीं अनिश्चितताओं के साथ हमने भी यात्रा प्लान की बेटी को यही बताया कि देखते हैं कब आ पाते हैं मन में यह भी आया कि पता नहीं आ भी पायेंगे कि नहीं। बस इसी बीच हमको भी उस विषाणु ने चपेट में ले लिया। मन की गति उस मेमने की तरह हो गयी जो खुंखार भेड़ियों के बीच फंस जाता है और खुद को असहाय स्थिति में उनको समर्पित कर देता है। खैर, हमने भी कोरोना को चपेट लिया और उसकी तेरवीं करके ही माना। इस एकांत में प्रियजन सुध लेते रहे दुआयें देते रहे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

Azim Premji Foundation

Come join us!

Help build a better public education system

Work as **Teacher Educators at our District Institutes** with government school teachers, helping them build their professional abilities, or as **Teachers at our Azim Premji Schools**

Role: Teacher Educators in our District Institutes
Apply: bit.do/rpapf

Role: School Teachers at Azim Premji Schools in Uttarkashi and Udham Singh Nagar
Apply: bit.do/stapf

Eligibility criteria and application process is available on our website. To know more visit: https://careers.azimpremjifoundation.org